KEEP THE TORCH OF DHAMMA A LIGHT

LET IT SHINE BRIGHTLY IN YOUR DAILY LIFE.

विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2567, पौष पूर्णिमा, 25 जनवरी, 2024, वर्ष 53, अंक 8

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

यो च बुद्धञ्च धम्मञ्च, सङ्घञ्च सरणं गतो।
चत्तारि अरियसच्चानि, सम्मप्पञ्ञाय पस्सति॥
दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं।
अरियं चट्ठङ्गिकं मग्गं, दुक्खूपसमगामिनं॥
एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं।
एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चति॥

– धम्मपदपालि 190,191,192 बुद्धवग्गो

जो बुद्ध, धर्म और संघ की शरण गया है, जो चार आर्य सत्यों - दुःख, दुःख की उत्पत्ति, दुःख से मुक्ति और मुक्तिगामी आर्य अष्टांगिक मार्ग - को सम्यक प्रज्ञा से देखता है, यही मंगलदायक शरण है, यही उत्तम शरण है। इसी शरण को प्राप्त कर (व्यक्ति) सभी दुःखों से मुक्त होता है।

जन्म शताब्दी विशेषांक

(रविवार, फरवरी 4, 2024 के कार्यक्रम में विश्व विपश्यना पगोडा में केवल साधकों के लिए)

यहां स्कैन करके अपना नाम रजिस्टर करा सकते हैं। ↳ (रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है।)

प्रिय धम्म भाइयो और बहनो,

पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का जी (१९२४-२०२४) की जन्म शताब्दी पर आप सभी को मंगल मैत्री।

गुरुजी ने बहुत करुणा और मैत्री के साथ हम सभी को विपश्यना की शुद्ध विधा का धर्मदान दिया। हमें अपने दुखों से मुक्त होने का मार्ग दिखाया, और इस कार्य में आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने अपने जीवन के 58 वर्ष अपने आप को धर्म में पुष्ट करने और धर्म को वितरित करने में लगाया। १९६९ में भारत आने के बाद से उन्होंने विपश्यना को विश्वभर में अनेकों साधकों तक पहुँचाया। विपश्यना ने हमें अपने मन को निर्मल बनाने और अनेकों धर्म-पिपासुओं की सेवा करने का अवसर दिया जिससे हमें द्वितीय बुद्ध शासन में अपना योगदान दे कर पारमी अर्जित करने का मौका मिला।

अब पूज्य गुरुजी की जन्म शताब्दी एक ऐसा अवसर है जब हम गुरुजी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के साथ-साथ अपनी साधना व सेवा को नई ऊर्जा से भर सकते हैं। इसलिए मुंबई-स्थित "विश्व विपश्यना पगोडा" पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसका सीधा प्रसारण यूट्यूब पर भी किया जायगा।

यह कार्यक्रम रविवार के दिन फरवरी 4, 2024 को विश्व विपश्यना पगोडा पर सुबह 10 बजे से सायं 4 बजे के बीच होगा। हम आशा करते हैं कि "विश्व विपश्यना पगोडा" में निधानित भगवान बुद्ध की शरीर धातु के नीचे अधिक से अधिक संख्या में हम सभी एक साथ बैठ कर तपने के इस सुअवसर का लाभ अवश्य उठायें।

गुरुजी अनेकों बार भगवान की इस वाणी का महत्त्व समझाते थे – ***"समग्गानं तपो सुखो"*** – साथ मिल कर तपना बड़ा सुखद होता है।

तो आइए, फरवरी 4, 2024 को, हम विश्व में जहाँ कहीं भी हों वहीं, अपने तथा बहुतों के हित-सुख के लिए मिलकर विपश्यना साधना करें अर्थात सारे विश्व के लोग ***समग्गानं*** का लाभ उठायें। सब की एकत्रित ऊर्जा के बल पर सारे विश्व का कल्याण हो। पूज्य गुरुजी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का यह बहुत बड़ा और योग्य अवसर है।

हम आपके यथानुकूल किसी भी समय जुड़ने का स्वागत करते हैं। आप इस कार्यक्रम से अनेक प्रकार से जुड़ सकते हैं, जैसे:

1. विश्व विपश्यना पगोडा पर साधना कर सकते हैं (पंजीकरण की लिंक: *https://centenary.globalpagoda.org*)
2. समीप के विपश्यना केन्द्र पर साधना कर सकते हैं, (केंद्र पर सुविधा हो तो) (सर्वत्र सीधा प्रसारण होगा।)
3. सामूहिक साधना के लिए साधारणतया जिन स्थलों पर जाते हों, वहीं सुविधा बना करके साधना कर कते हैं।
4. स्थानीय धम्म-बन्धुओं के साथ कहीं भी सामूहिक साधना का आयोजन करके जुड़ सकते हैं।
5. घर या कार्यालय में भी सुविधा करके साधना कर सकते हैं।

कार्यक्रम का सीधा-प्रसारण Vipassana Meditation ***'यूट्यूब'*** चैनल पर किया जाएगा. Link:-

https://youtube.com/live/KSKfzUOvWjQ?feature=share

रविवार, फरवरी 4, 2024

विश्व विपश्यना पगोडा पर कार्यक्रमों की रूपरेखा निम्न प्रकार है:—

समयः	कार्यक्रम
सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक	सामूहिक साधना
दोपहर 12 बजे से 12:30 बजे तक	भगवान बुद्ध से लेकर कल्याणमित्र श्री सत्यनारायण गोयन्का जी तक गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा धर्म-यात्रा की मनमोहक प्रदर्शनी
दोपहर 12:30 बजे से 1:45 बजे तक	भोजनावकाश
दोपहर 1:45 बजे से 2 बजे तक	जन्म शताब्दी का महत्त्व
दोपहर 2 बजे से 2:15 बजे तक	पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का के 1955 तक के जीवन पर एक फिल्म
दोपहर 2:15 बजे से 2:30 बजे तक	I- पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण जी का आत्मकथन – 'Let Us Walk the Path of Dhamma' एवं 'चलें धर्म के पंथ' पुस्तकों का अनावरण II- 'विपश्यना: विश्व शांति के लिए आंतरिक शांति' नामक कॉफी टेबल पुस्तक का अनावरण III- 'स्मारिका दैनंदिनी– धर्म का जीवन' का अनावरण
दोपहर 2:30 बजे से 3 बजे तक	पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का जी के सपने और हमारा कर्तव्य
दोपहर 3 बजे से 3:30 बजे तक	पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का जी की जन्म-शताब्दी के अवसर पर ***सम्मा सङ्कप्पो*** (सम्यक संकल्प)
दोपहर 3:30 बजे से शाम 4 बजे तक	मंगल मैत्री

यह अनेक साधकों के लिए साथ मिल कर साधना करने, एवं पूज्य गुरुजी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का स्वर्णिम अवसर है।

सादर प्रणाम व मंगल मैत्री,

विश्व विपश्यना प्रतिष्ठान(अध्यक्ष एवं न्यासीगण), मुंबई

oooooooooooooooooooo

अधिक जानकारी और बस की बुकिंग के लिए निम्न लिंक पर क्लिक करें:-

http://busseva.tejash.me

आत्मकथन

धर्म यात्रा के पचास वर्ष

एक सितंबर, 1955, मेरे जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण दिवस। माइग्रेन के सिरदर्द का असाध्य और असह्य रोग, जो मेरे सिर पर अभिशाप बन कर चढ़ा हुआ था, वही अब मेरे लिए वरदान बन गया। मैं गुरुदेव परम पूज्य सयाजी ऊ बा खिन के विपश्यना ध्यान शिविर में दस दिन के लिए सम्मिलित हुआ। शिविर में सम्मिलित होने के पूर्व की मेरी झिझक, इस झिझक से पूर्णतया मुक्त न होने पर भी उसमें सम्मिलित होना और इस शिविर द्वारा आश्चर्यजनक रूप से लाभान्वित होना-- अब यह इतिहास का एक बहुचर्चित पृष्ठ बन गया है।

मूल झिझक तो इसी बात की थी कि यह बौद्ध धर्म की साधना है। इससे प्रभावित होकर कहीं मैं अपना जन्मजात हिंदू धर्म तो नहीं छोड़ दूंगा? कहीं मैं बौद्ध तो नहीं बन जाऊंगा? यदि ऐसा हुआ तो घोर अनिष्ट हो जायगा। मैं धर्मभ्रष्ट हो जाऊंगा। मेरा घोर पतन हो जायगा। बुद्ध के प्रति असीम श्रद्धा होते हुए भी बौद्ध धर्म के प्रति अश्रद्धा ही नहीं बल्कि क्षुद्र भाव भी था। इस पर भी शिविर में सम्मिलित हुआ, क्योंकि गुरुदेव ने विश्वास दिलाया कि विपश्यना विद्या में शील, समाधि, प्रज्ञा के अतिरिक्त और कुछ नहीं सिखाया जायगा। इन तीनों के प्रति मेरे जैसे किसी हिंदू को ही नहीं बल्कि किसी भी धार्मिक परंपरा के व्यक्ति को भी क्या एतराज होता?

शील-सदाचार का जीवन जीना, समाधि द्वारा मन को वश में करना, प्रज्ञा जगा कर चित्त को जहां तक हो सके, विकारविहीन बना लेना-- इन तीनों शिक्षाओं का कोई भी समझदार व्यक्ति विरोध कर ही नहीं सकता। और मुझे तो क्रोध और अहंकार जैसे मनोविकारों से छुटकारा पाना था, जिनके कारण तनावभरा जीवन जीते हुए, मैं माईग्रेन का रोगी हो गया था। विकार दूर होंगे तो तनाव दूर होगा और तनाव दूर होगा तो माईग्रेन दूर होगी-- यह सच्चाई मेरे लिए बहुत स्पष्ट हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त जिस परिवार में जन्मा और जिस वातावरण में पला, उसमें दुराचरण से विरत रहना और सदाचरण में निरत रहना तथा अपने चित्त को विकारों से विमुक्त रखना-- जीवन में यही आदर्श उतारने का महत्त्व सिखाया गया था। अत: जब गुरुदेव ने बताया कि भगवान बुद्ध ने यही सिखाया और विपश्यना में भी यही सिखाया जायगा, इसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं सिखाया जायगा, तो यह सुन कर मैं आश्वस्त हुआ था। फिर भी मन के एक कोने में थोड़ी बहुत झिझक थी ही।

बुद्ध की शिक्षा के बारे में कुछ ऐसी बातें सुन रखी थी, जिनका अनुसरण करना उचित नहीं समझता था। अत: मन ही मन यह निर्णय किया कि शिविर में मुझे केवल शील, समाधि और प्रज्ञा का ही अभ्यास करना है। इन तीनों के अतिरिक्त मुझे अन्य कुछ भी स्वीकार नहीं करना है। इस विद्या को आजमा कर देखने के लिए शिविर में सम्मिलित हुआ हूं।

इतना तो मैं समझ ही रहा था कि बुद्धवाणी में अनेक अच्छी शिक्षाएं विद्यमान हैं, तभी यह विश्व के इतने देशों में और इतनी बड़ी संख्या में लोगों द्वारा मान्य हुई है, पूज्य हुई है। परंतु इसमें जो कुछ अच्छा है, वह हमारे वैदिक ग्रंथों से ही लिया गया है। अत: इसमें जो भी हानिकारक मिलावटें हुई हैं, वे मेरे लिए सर्वथा त्याज्य रहेंगी। इसका पूरा ध्यान रखूंगा।

शिविर के दस दिन पूरे होते-होते मैंने देखा कि मेरे गुरुदेव के

कथनानुसार शील, समाधि और प्रज्ञा के अतिरिक्त वहां और कुछ नहीं सिखाया गया। इस विद्या के आशुफलदायिनी होने के दावे को सत्य होते देखा। दस दिन के अभ्यास से ही मन के विकार निकलने आरंभ हुए। इससे तनाव दूर होना आरंभ हुआ और फलस्वरूप माइग्रेन का भयंकर रोग दूर हुआ जो कि मानसिक तनाव के परिणामस्वरूप ही मुझे दु:खी बनाये रखता था। माइग्रेन के लिए ली जाने वाली अफीम की दु:खदायी सूई से भी सदा के लिए छुटकारा मिला। नींद के लिए बहुधा ली जाने वाली नशीली दवाओं से भी सदा के लिए मुक्ति मिली। जिन विकारों के जागने से मन व्याकुलता से भर जाया करता था, अब विपश्यना के दैनिक अभ्यास के कारण वे क्षीण होने लगे। सबसे बड़ी जानकारी यह हुई कि इस विद्या में मुझे कोई दोष नजर नहीं आया। सर्वथा निर्दोष ही निर्दोष। कोई हानि नजर नहीं आई। सर्वथा लाभदायी ही लाभदायी।

पहले ही शिविर में मुझे विपश्यना इतनी शुद्ध लगी कि जहां तक साधना का प्रश्न है मुझे किसी दूसरी ओर देखने तक की आवश्यकता नहीं रही। मेरी आध्यात्मिक खोज का पूर्ण समाधान हो गया। मैं इस विद्या में पकने के लिए सुबह-शाम नित्य नियमित एक-एक घंटे ध्यान करता रहा और साथ-साथ साल में कम से कम एक बार दस दिन का शिविर लेता रहा। कभी एक महीने का लंबा शिविर भी लिया, जिससे कि यह विद्या स्वानुभूति द्वारा गहराई से समझ में आने लगी। यह नितांत न्यायसंगत और धर्मसंगत लगी, व्यावहारिक और वैज्ञानिक लगी। इसमें अंधविश्वास के लिए रंचमात्र भी अवकाश नहीं दिखा। गुरुदेव कहते हैं या बुद्ध ने कहा है या तिपिटक में लिखा है इसलिए अंधश्रद्धा से मान लेने का कहीं कोई आग्रह नहीं। जो कहा गया उसे बुद्धि के स्तर पर समझो और फिर अनुभूति के स्तर पर जानो, तब स्वीकार करो। बिना जाने, बिना समझे, बिना अनुभव किये, अंधेपन से स्वीकार मत करो।

आर्यसमाज ने मुझे बुद्धिवादी बनाया और अंधविश्वासों से दूर हटाया। यही जीवन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। पर विपश्यना तो इससे कहीं आगे बढ़ गयी। बुद्धिजन्य शुष्क दार्शनिक विवादों और आर्द्र भक्ति के भावावेश से विमुक्त कर, इसने मुझे आध्यात्मिक क्षेत्र का यथार्थ अनुभव करना सिखाया। जितना-जितना सत्य अनुभूति पर उतरा, उतना-उतना स्वीकारते हुए आगे बढ़ता गया और उससे सूक्ष्मतर सत्यों को अनुभूति पर उतारता गया। जितना-जितना अनुभूति पर उतरा, उसे स्वीकारते हुए यह जांचता गया कि मनोविकार दुर्बल हो रहे हैं या नहीं! उनका निर्मूलन हो रहा है या नहीं! वर्तमान के प्रत्यक्ष सुधार को महत्त्व देने वाली यह शिक्षा युक्तियुक्त लगी। यह स्पष्ट समझ में आने लगा कि वर्तमान सुधर रहा है तो भविष्य अपने आप सुधरेगा। लोक सुधर रहा है तो परलोक सुधरेगा ही। यह भी खूब समझ में आने लगा कि अपने मन को मैला करने की शतप्रतिशत जिम्मेदारी स्वयं अपनी है। कोई बाह्य अदृश्य शक्ति इसे क्यों मैला करती भला? अत: इसे सुधारने का दायित्व भी शतप्रतिशत अपना ही है। गुरु की कृपा इतनी ही कि उसने बड़ी करुणा से हमें मार्ग आख्यात कर दिया। कदम-कदम चलना तो स्वयं हमें ही पड़ेगा। कोई अन्य हमें कंधे पर उठा कर मुक्त अवस्था तक पहुँचा देगा, इस धोखे से सर्वथा मुक्ति मिली। यह सच्चाई अनुभूति के स्तर पर स्पष्ट होती चली गयी।

इस विद्या ने अदृश्य देवी-देवताओं के प्रति घृणा या द्वेष जगाना नहीं सिखाया, बल्कि उनके प्रति मैत्रीभाव रखना सिखाया। "अपनी मुक्ति अपने हाथ, अपना परिश्रम अपना पुरुषार्थ" के भाव ने अहंभाव नहीं जगने दिया बल्कि अपनी जिम्मेदारी के प्रति विनम्र सजगता ही जगायी। परावलंबन के स्थान पर स्वावलंबी होने का बोध कल्याणकारी लगा। "स्वावलंब की एक झलक पर, न्यौछावर कुबेर का कोष"; किसी कवि के ये बोल स्मरण होते ही तन-मन पुलकायमान हो उठा। अत: जहां तक साधना का प्रश्न है, संदेह के लिए रंचमात्र भी गुंजाइश नहीं रही। संदेह होता भी क्यों? प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? प्रत्यक्ष लाभ जो हो रहा था। जीवन ही बदल गया। जैसे एक नया जन्म हुआ।

सन 1954 पच्चीस सौ वर्ष के प्रथम बुद्ध शासन का अंतिम वर्ष था। इसी वर्ष मैं पहली बार बुद्ध शासन के संपर्क में आया। निरामिष भोजन के प्रबंध के लिए मुझे छठ्ठ संगायन की भोजन प्रबंधक समिति में मनोनीत किया गया। सन 1955 पच्चीस सौ वर्ष के द्वितीय बुद्ध शासन का प्रथम वर्ष था। इसी वर्ष मुझे विपश्यना विद्या प्राप्त हुई। लगता है कि द्वितीय बुद्ध शासन को आरंभ करने वाला यह प्रथम वर्ष मेरे सौभाग्य का सूर्योदय बन कर आया और प्रथम बुद्ध शासन का अंतिम वर्ष मेरे लिए इस भाग्योदयी सूर्य के शुभागमन की पूर्व सूचना देता हुआ प्रत्यूष की लालिमा लेकर आया। धर्म यात्रा के इन पचास वर्षों ने मेरे जीवन को सार्थक बनाया, सफल बनाया। मैं धन्य हुआ।

शेष जीवन धर्म को ही समर्पित रहे।

धर्मपथिक,

सत्य नारायण गोयन्का

(—वर्ष 35, बुद्धवर्ष 2549, आश्विन पूर्णिमा, 17-10-2005, अंक 4)

मंगल मृत्यु

मदुराई के आचार्य श्री एम. ए. सुब्रमणियम 23 अक्तूबर को गाड़ी में यात्रा करते हुए दिवंगत हो गये। अंतिम क्षण तक वे बिल्कुल सजग, सचेत रहे। 1998 से उन्होंने सहायक आचार्य के रूप में तमिलनाडु प्रदेश में अनेक शिविरों का संचालन किया। मलेसिया में भी तमिल भाषियों के लिए शिविर लगाया तथा अनेक अ-केंद्रीय शिविरों में सेवा दी। उन्होंने सभी प्रकार की धम्म सामग्री का तमिल भाषा में अनुवाद किया यथा- 1-दिवसीय से लेकर 60-दिवसीय शिविरों तक का। इसके अतिरिक्त अनेक धम्म पुस्तकों का भी तमिल भाषा में अनुवाद व प्रकाशन कराने में सहयोग दिया। उन्होंने धम्मसेतु, चेन्नई और धम्म अरुणाचल केंद्रों की केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा की। इन सभी पुण्यकार्यों के फलस्वरूप वे धर्मपथ पर सतत आगे बढ़ते हुए निर्वाणलाभी हों, धम्म परिवार की यही मंगल कामना है।

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक दिवसीय महाशिविर (Mega Course) कार्यक्रमः

1. रविवार 04 फरवरी, **मेगा इवेंट**- के कार्यक्रम ऊपर देखें। एतदर्थः-

Online registration: *http://oneday.globalpagoda.org/register* **Eail:** *guruji.centenary@globalpagoda.org* or *oneday@globalpagoda.org*

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्कः

info@globalpagoda.org or *pr@globalpagoda.org*

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

केंद्र-आचार्य

1. श्री अशोक बाभळे, मुम्बई— 'धम्म उदक', दापोली (रत्नागिरि) विपश्यना केंद्र के लिए केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा
2. श्रीमती संतोषी बाभळे (स.आ.), 'धम्म उदक', दापोली (रत्नागिरि) विपश्यना केंद्र के केंद्र-आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री कर्मा जिग्मे दावा, पूर्व सिक्किम
2. श्रीमती त्रिशा कोठारी, (गुजरात)
3. श्रीमती भारती शाह, सुरत
4. U Aung Kyaw Nyan Wai, Myanmar
5. U Myo Myint Thein, Myanmar
6. U Aung Myat Cho, Myanmar
7. U Khin Saung Nyunt, Myanmar
8. Daw Nang Kham Phone, Myanmar
9. Daw Lay Sint, Myanmar
10. Daw Yi Yi -1, Myanmar

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1.श्री प्रवीण काटपाताल, नवी मुंबई
2. श्रीमती शशि तोदी, अहमदाबाद
3. श्रीमती रामेश्वरी खुशालसिंह परदेशी
4. Mr. Li Zhuang Wang, China
5. U Khin Mg Win, Myanmar
6. U Tint Lwin, Myanmar
7. U Sein Win, Myanmar
8. U Sai Cho, Myanmar
9. U Tun Tun Khaing, Myanmar
10. U Hling Lay, Myanmar
11. U Aung Naing Lay, Myanmar
12. Daw Nyo Nyo Tin, Myanmar
13. U Thet Tin Sein, Myanmar
14. U Chandra Kumar, Myanmar
15. Ms. Than Aye, Myanmar
16. Ms. Win Win Myint, Myanmar
17. Ms. Khin Htwe, Myanmar
18. Ms. Soe Pyint, Myanmar
19. Ms. Yee Yee - 2, Myanmar

बालशिविर शिक्षक

1. श्री मुकुल शर्मा ठाणे
2. Mr. Xiong Qi, Sichuan, china
3. Mr. Wu Jian-e, Sichuan, china
4. Mr. Song YuLin, Sichuan, china
5. Mr. Li Weidong, Hunan, China
6. Mr. Jiming li, China

मुंबई महानगर क्षेत्र में विपश्यना संबंधी गतिविधियां

मुंबई महानगर एवं आसपास के क्षेत्रों में कई विपश्यना केंद्र और ध्यान की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इनके बारे में विस्तृत जानकारी के लिए कृपया निम्न लिंक को देखें:

https://mumbai.vridhamma.org

इसी प्रकार **पूरे भारत में 1-दिवसीय शिविर और सामूहिक साधनाओं** के लिए कृपया इस लिंक पर क्लिक करके देखें:

https://www.vridhamma.org/1-day-Courses-Information-in-India

oooooooooooooooooooo

ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन

सभी भावी शिविरों की जानकारी नेट पर निम्न लिंक्स पर उपलब्ध हैं। सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन ही हो रही है। अतः आप लोगों से निवेदन है कि ***धम्मगिरि के लिए*** निम्न लिंक पर चेक करें और अपने उपयुक्त शिविर के लिए अथवा सेवा के लिए सीधे ऑनलाइन आवेदन करें:

https://www.dhamma.org/en/schedules/schgiri

oooooooooooooooooooo

विश्वभर के सभी भावी शिविरों की जानकारी एवं आवेदन के लिए: ***https://schedule.vridhamma.org एवं www.dhamma.org***

अथवा निम्न लिंक भी देखें--

https://www.dhamma.org/en-US/locations/directory#IN

हिंदी वेबसाइट हेतु लिंक: www.hindi.dhamma.org

oooooooooooooooooooo

दोहे धर्म के

हिंदू हूं ना बौद्ध हूं, ना मुस्लिम ना जैन।
धरमपंथ का पथिक हूं, सुखी रहूं दिन रैन॥

धर्म सदा मंगल करे, धर्म करे कल्याण।
धर्म सदा रक्षा करे, धर्म बड़ा बलवान॥

धरम हमारा बंधु है, सखा सहायक मीत।
चलें धरम की रीत ही, रहे धरम से प्रीत॥

धर्म सदृश रक्षक नहीं, धर्म सदृश न ढाल।
धर्म पालकों का सदा, धर्म रहे रखवाल॥

दूहा धरम रा

धरम जगत रो ईसवर, धरम ब्रह्म भगवान।
धरम सरण मंगळ करण, धरम सरण सुख खाण॥

ईं धरती पर धरम रो, होवै मंगळ घोस।
दूर हुवै दुरभावना, जगै धरम रो होस॥

काळी रात अधरम री, दुख छायो चहुँ ओर।
धन्य धरम सूरज उग्यो, ल्यायो सुख रो भोर॥

हो अनुकंपा धरम री, करुणा स्यूं भरपूर।
खुलै किवाड़ा मोक्ख रा, अंतराय ह्वै दूर॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड,
वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

धम्म ग्राम
माता विशाखा हैप्पी विलेज सेवाश्रम
(विपस्सी साधकों का निर्माणाधीन सामूहिक निवास स्थल व सेवा केंद्र)
ग्राम- लखाही-271805, श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश, भारत
M. +91 8756187439, 9935310792
E-Mail -happyvillagesociety@gmail.com
www.happyvillagesewashram.com
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74,
सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003,
फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा. 09423187301,
Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2567, मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 26 दिसंबर, 2023; वर्ष 53, अंक 7
वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 16 JANUARY, 2024, DATE OF PUBLICATION: 25 JANUARY, 2024

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 243553, 244076, 244086, 244144, 244440
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org